~~वैदिक संस्कृति~~

मुगल साम्राज्य

Lecture given by -

Mamta Rani

Guest Assistant Professor

Deptt. of History.

SNSRKS College, Saharsa,

Bihar.

मुगल साम्राज्य के पतन के कारणों का परीक्षण :-

(1) परम्परागत दृष्टिकोण :- इरवीन, सर यदुनाथ सरकार, रानाडे आदि विद्वानों के द्वारा साम्राज्य के पतन में व्यक्तित्व तथा निजी शासक की नीति पर विशेष बल दिया गया। परम्परागत इतिहास लेखन में औरंगजेब के कमजोर उत्तराधिकारी, मुगल अमीरवर्ग की चरित्रहीनता, औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता की नीति के विरुद्ध प्रतिक्रिया आदि कारकों पर विशेष बल दिया गया है।

किन्तु परवर्ती काल के इतिहास लेखन में उपर्युक्त तथ्यों के प्रभाव को कम करके आंकने की कोशिश की गई है। इनमें कुछ कारकों को अस्वीकार कर दिया गया है जबकि कुछ अन्य कारकों को मुख्य कारक के रूप में न देखकर पूरक कारक के रूप में देखा गया है। उदाहरण के लिए मुगल अमीर वर्ग के चरित्रहीनता जैसे कारक को इस आधार पर अस्वीकार कर दिया गया है कि किसी अमीर वर्ग के बीच से निकलकर निजाम-उल-मुल्क, मुर्शीदकुली खान, आसफ खां तथा कुछ अन्य योग्य अमीर अलग-अलग क्षेत्रों में स्थापित हुए थे तथा उन्होंने बेहतर प्रशासनिक व्यवस्था कायम की थी। दूसरी तरफ औरंगजेब की धार्मिक नीति के प्रभाव को इस हद तक नहीं आंका जा सकता कि इसे

आन्तरिक व्यापार में प्रयुक्त वस्तुएं :

विशेषकर खाद्यान्न, कपड़े तथा विलासिता सम्बन्धी सामग्रियों का प्रयोग, गुजरात तट का व्यापारिक रूप में बंगाल तट से जुड़ा होना तथा दक्षिण में कोरोमंडल तट तथा दक्कन से जुड़ाव।

विदेशी व्यापार :-

प्रेरित करने वाले कारक

(i) एक लम्बे काल के पश्चात उत्तर भारत का काबुल एवं कांधार से सीधा जुड़ाव, काबुल से व्यापारिक कारवां मध्यएशिया को जाता था तो कांधार से पश्चिम एशिया को।

(ii) मुगल शासक मध्य एशिया से आये थे जो कृषि की दृष्टि से पिछड़ा क्षेत्र रहा था किन्तु वाणिज्य व्यापार की दृष्टि से काफी विकसित था इसलिए मुगल शासकों का व्यापार में स्वभाविक रूप में रूची रही।

(iii) मुगल शासक राजकुमार तथा अमीरों ने आमदनी में वृद्धि के लिए व्यापार में भी रूची ली बताया जाता है कि जहाँगीर, नूरजहाँ, शाहजादा खुर्रम, दारा शिकोह, औरंगजेब, मीर जुमला, आसफ खां सबके निजी जहाज थे। ये जहाज सूरत से लाल सागर की ओर चलते थे।

(iv) इस काल में भारत में मुगल साम्राज्य, पूर्वी यूरोप में ओटोमन साम्राज्य, ईरान में सफवी

हुमायूँ ने भारत में साम्राज्य विभाजन की परम्परा
को अस्वीकार कर दिया। बाबर ने हुमायूँ को
यह निर्देश दिया था कि यद्यपि अपने भाइयों
के साथ नरम व्यवहार करना किन्तु उनके साथ
अपने क्षेत्र का विभाजन स्वीकार मत करना। हुमायूँ
ने औपचारिक रूप में इसी निर्देश का पालन किया
था यद्यपि अनौपचारिक रूप में उसे साम्राज्य का
विभाजन स्वीकार करना पड़ा था फिर बाबर और
हुमायूँ के समक्ष दूसरी प्रमुख चुनौती रही थी
वंशानुगत अमीर वर्ग, मंगोल परम्परा से प्रेरित होकर
मुगल अमीर भी अपने वंशानुगत अधिकारों का
उसी प्रकार दावा कर रहे थे जिस प्रकार मुगल
बादशाह। इसलिए बाबर और हुमायूँ ने मुगल
अमीरों के इस वंशानुगत अधिकार के दबाव को स्वीकार
किया था। आगे अकबर ने ही मनसबदारी-जागीर
-दारी पद्धति के माध्यम से इस समस्या का वास्तविक
निराकरण प्रस्तुत किया।

इस प्रकार बाबर और हुमायूँ अपने
शासत्व पर मंगोल प्रभाव को सीमित करने का
प्रयास किया। साथ ही तुर्की पद्धति से भी प्रेरणा
लेने की कोशिश की किन्तु वे अपने उद्देश्य में
आंशिक रूप में ही सफल रहे थे।

अपनी रकम जमा करवाते थे तथा बदले में हुण्डी प्राप्त करते थे। हुण्डी बदले उन्हें थोड़ा भुगतान करना होता फिर वे दर-दराज की इलाकों में नकद के बदले हुण्डी का ही उपयोग करते थे। ऐसा माना जाता है कि इस काल में अहमदाबाद में व्यापारी अधिकांशत: हुण्डियों के माध्यम से ही भुगतान करते थे।

फिर इस काल में मुद्रा व्यवस्था के विकास के साथ बीमा व्यवस्था को भी प्रोत्साहन मिला। मुगलकाल के एक लेखक सुजान राय खत्री इस काल में विकसित बीमा व्यवस्था की ओर संकेत करता है। बीमा के माध्यम से व्यापारिक वस्तुएँ तथा नकद दोनों की सुरक्षा प्रदान की जाती थी फिर वे सर्राफ जो हुण्डी जारी करते थे नकद एवं वस्तुओं पर बीमा के माध्यम से सुरक्षा प्रदान करते थे।

नगरीकरण :-

मुगलकालीन नगरीकरण तीसरे नगरीकरण के सर्वोच्च विकास को दर्शाता है। इस काल में अनेक कारकों के द्वारा नगरीकरण को प्रोत्साहन दिया गया [Material में देखें]